ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

सितम्बर, 2024 (प्रथम)

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,125
विक्रम संवत् 2081
दयानन्दाब्द 201

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 20, अंक 15

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

(सितम्बर, 2024 प्रथम)

1 से 15 सितम्बर, 2024 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. ईश्वर पर अविश्वास क्यों ? 3
3. स्वास्थ्य चर्चा—लहसुन के अनेक लाभ 4
4. मैं आर्यसमाजी कैसे बना ? 5
5. विश्वगुरु भारत की संस्कृति के चिह्न विश्व के देशों में आज भी प्रासंगिक है—एक विवरण 7
6. कविता—वृद्धावस्था में सन्तोष सब्र 8
7. हम क्यों हारे ? दास्तान-ए-गद्दारी (5) 9
8. स्वतन्त्र भारत में हमने क्या पाया ? 11
9. वेदसम्मत गृहाश्रम का निर्वाह ही दम्पति के जीवन की सफलता है 12
10. चतुर्मुखी प्रतिभा सम्पन्न श्रीकृष्ण मनोरंजन की वस्तु नहीं 14
11. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 15

आर्य प्रतिनिधिपाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

जो भूगोल और खगोल विद्या को पढ़कर 'ग्रहण' के वास्तविक स्वरूप को पहचान लेते हैं, उनको कोई शंका नहीं होती। शंका अविद्या-जन्य है, ज्ञान-जन्य नहीं। इसलिए वेदमन्त्र कहता है कि सत्य और अनृत के दो रूपों को अलग-अलग पहचानने की कोशिश करनी चाहिए। इसी का नाम 'दर्शन' है।

दर्शन के पश्चात् 'व्याकरण' का स्थान है। व्याकरण में 'वि' और 'आ' उपसर्ग है। 'कृ' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय लगकर 'करण' बनता है। व्याकरण का अर्थ है सत्य को झूठ से अलग कर देना। तीन प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। पहले वे हैं जिनको पता ही नहीं चलता कि दूध शुद्ध है या पानी मिला हुआ। उनको दूध और पानी के रूपों का ज्ञान नहीं, परन्तु जिन्होंने दूध और पानी के रूपों को पहचानकर यह मालूम किया कि इस दूध में पानी मिला है तो उनको उस दूध पर वही श्रद्धा नहीं रहती, जो शुद्ध दूध पर होनी चाहिए थी। यह तो हुई 'दर्शन' की बात। परन्तु यह जानते हुए भी कि दूध में पानी मिला है यदि यह शक्ति नहीं कि दूध का दूध और पानी का पानी अलग कर दें तो हम अपने ज्ञान से पूरा लाभ नहीं उठा सकते। उत्तम श्रेणी के वे पुरुष हैं जिनमें 'क्षीर-नीर-विवेक' भी हो और क्षीर-नीर-व्याकरण भी कर सकते हों। लोकोक्ति है कि हंस ही दूध और पानी को अलग कर सकता है। मनुष्यों में जो परमहंस हैं, वे सत्य और अनृत में विवेक भी रखते हैं और उनको अलग-अलग भी कर सकते हैं।

हमने ऊपर यह दिखाया कि मनुष्य जान-बूझकर असत्य पर श्रद्धा नहीं करता। परन्तु वह जान-बूझकर दूसरों में असत्य का प्रचार कर सकता है, यदि उसमें काम-क्रोध-मोह आदि दोष हों। यदि हम धोखा देकर वश में करना चाहते हैं तो इसका यह अर्थ है कि हम स्वयं तो जानते हैं कि अमुक बात असत्य है, परन्तु दूसरों को इस ज्ञान से वंचित रखना चाहते हैं। हम अपनी आंखों से तो देख रहे हैं लेकिन दूसरों की आंखों में धूल डालते हैं। धोखा जान-बूझकर दिया जाता है। असत्य पर श्रद्धा अज्ञानवश की जाती है।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि अन्ध-श्रद्धा का क्या अर्थ है? क्या हम जान-बूझकर किसी असत्य पर श्रद्धा करते हैं या सत्य की खोज नहीं करना चाहते? वस्तुतः जिस वस्तु को ठीक-ठीक जान लिया उसी पर श्रद्धा की जाती है। परन्तु कभी-कभी श्रद्धा करने वाला दर्शनशक्ति नहीं रखता, अतः वह अपने दर्शन के लिए दूसरों की आंखों को साधन बनाता है और दूसरे उसको धोखा दे देते हैं। कल्पना कीजिए कि हमको श्रद्धा है कि बहिश्त या स्वर्ग में हमको अमुक-अमुक भोग्यपदार्थ मिलेंगे। हमने नहीं देखा, न यह हम देख सकते हैं, परन्तु हमने किसी विशेष पुरुष की बात मान ली। हमारे में न तो यह शक्ति है कि अपनी आंखों से देख लें, न शक्ति है कि यह जांच कर सकें कि जिनकी आंखों पर हम विश्वास करते हैं, वे भी देखने की योग्यता रखती है या नहीं। एक पुरुष कहता है कि मेरी बात पर विश्वास करो, क्योंकि मैं ईश्वर का दूत हूँ, ईश्वर मेरे द्वारा तुमको ऐसी आज्ञा दे रहा है, तुम मान लो। अब प्रश्न यह होता है कि कैसे मान लिया जाये कि तुम वस्तुतः देवदूत हो और ईश्वर तुम्हारे द्वारा उपदेश दे रहा है? ऐसा पुरुष अपने देव-दूतत्त्व को सिद्ध करने के लिए कोई चमत्कार (मौजिज़ा Miracle) दिखा देता है। लोग मान लेते हैं। वस्तुतः उन्होंने क्या देखा? न तो वह चमत्कार था, न तो वह चमत्कार देवदूतत्व के लिए प्रमाण था। साठ-सत्तर वर्ष पहले भारत के ग्रामीणों में यह प्रसिद्ध था कि बिना घोड़ों या बैलों के रेलगाड़ी का चलना कलकत्ते की काली माई का चमत्कार है। इसी प्रकार के हजारों भ्रान्तिपूर्ण विचार फैले हुए हैं। लोग इन पर श्रद्धा रखते हैं और श्रद्धालु तथा धर्मात्मा कहलाते हैं।

क्रमशः अगले अंक में....

ईश्वर पर अविश्वास क्यों?

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

केनोपनिषद् प्रथम खण्ड

यद्वाचाऽनभ्युदितं, येन वागभ्युद्यते। (मन्त्र संख्या-4)
यन्मनसा न मनुते, येनाहुर्मनो मतम्। (मन्त्र संख्या-5)
यच्चक्षुषा न पश्यति, येन चक्षूँषि पश्यति। (मन्त्र संख्या6)
यच्छ्रोत्रेण न श्रृणोति, येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्। (मन्त्रांश संख्या-7)
यत्प्राणेन न प्राणिति, येन: प्राण प्रणीयते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते॥ (मन्त्र संख्या-8)

अर्थ-जो वाणी द्वारा प्रकाशित नहीं होता, जिससे वाणी का प्रकाश होता है।

जिसका मन से मनन नहीं किया जा सकता, जिससे मन मनन करता है।

जो आँख से नहीं देखा जाता, जिससे आँख देखती है।

जो कान से नहीं सुना जाता, जिससे कान सुनता है।

जो प्राण से प्राण के व्यापार में नहीं जाता, जिससे प्राण अपना व्यापार करता है।

उसी को तू ब्रह्म जान। जो वाणी, मन, आँख, कान, प्राण के व्यापार में आता है वह ब्रह्म नहीं है इत्यादि बहुत सारे निषेध हैं।

निषेध प्राप्त और अप्राप्त का भी होता है। **'प्राप्त'** का—जैसे कहीं बैठा हो, उसको वहाँ से उठा देना, **'अप्राप्त'** का—जैसे हे पुत्र! तू चोरी कभी मत करना, कुएँ में मत गिरना, दुष्टों का संग मत करना, विद्याहीन मत रहना, इत्यादि अप्राप्त का भी निषेध होता है। सो मनुष्यों के अप्राप्त परमेश्वर के ज्ञान में प्राप्त का निषेध किया है। इसलिए मूर्तिपूजा आदि अत्यन्त निषिद्ध है।

(6) किसी निकटतम व्यक्ति की मृत्यु से ईश्वर पर विश्वास का डिगना

प्रश्न-ईश्वर अविश्वास का एक कारण यह भी है कि जब किसी के घर अचानक किसी युवा व्यक्ति या प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है तब व्यक्ति परमात्मा से शिकायत करता है, "मेरा प्रिय पुत्र, पत्नी या प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु हो गई, तेरा क्या गया? क्या तू इन बच्चों को पालेगा।" इस प्रकार के अनेक प्रश्न परमात्मा में अविश्वास का कारण बनते हैं।

उत्तर-इसका उत्तर यह है कि जो व्यक्ति इस संसार में आये हैं उसका मरण अवश्य होगा। वे यह नहीं जानते कि प्रकृति और जीवात्मा के संयोग का नाम जन्म है और प्रकृति तथा जीवात्मा के वियोग का नाम मृत्यु है। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने गीता 2/27 में स्पष्ट कहा है—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रवं जन्म मृतस्य च।

जो उत्पन्न हुआ है वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म भी अवश्य होगा। जन्म के पीछे मृत्यु और मृत्यु के पीछे जन्म लगा हुआ है तो घबराहट और निराशा किसलिए?

इसके साथ जब ईश्वर की ओर से (हमारे कर्मानुसार) यदि विपत्ति आती है तो हमें ईश्वरीय व्यवस्था पर उस स्थिति को छोड़ते हुए धैर्य नहीं त्यागना चाहिए। संसार के महापुरुषों पर भी विपत्तियाँ आई हैं। क्या भगवान् राम, योगेश्वर कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा बुद्ध और न जाने अनगिनत महापुरुषों के जीवनों में आपत्तियाँ नहीं आईं? विपत्तियाँ प्रभु का स्मरण कराती हैं। मृत्यु वैराग्य और देशभक्ति के लिए भी प्रेरित करती है। मृत्यु अभिमान नाशक होती है। इसलिए मृत्यु से डरकर ईश्वर पर विश्वास न करना ठीक नहीं है। जन्म और मृत्यु तो प्राकृतिक अपरिहार्य व्यवस्था है।

(7) ईश्वर को केवल मन्दिर में मानने पर ईश्वर पर विश्वास भंग होता है।

प्रश्न-इसके अतिरिक्त केवल मूर्ति या मन्दिर में ही भगवान् का होना, अन्यत्र न होने की धारणा से भी ईश्वर अविश्वास को बढ़ावा मिलता है। **क्रमशः अगले अंक में....**

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

दूसरा सप्ताह-आठवें दिन कलियों के रस में 50 ग्राम शहद मिलाकर चाटिये, ऊपर गंगा का निर्मल जल केवल आचमन के साथ में लीजिये। यह तीन-तीन घण्टे बाद दिन में चार बार सेवन कीजिये।

तीसरा सप्ताह-तीसरे सप्ताह में लहसुन की पांच कलियों के साथ दस दाने मुनक्का पिसवाइये और गिलास भर पानी में घोलकर दो-तीन घण्टे बाद पीते रहिये। शेष समय गायत्री उपासना में लगाइये या सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करते रहिये।

चौथा सप्ताह-इस बार लहसुन पके हुए आंवले के रस में घोटकर पीजिये। अब आपके शरीर के त्वचा में दरारें आने लगेंगी। ऊपर की खाल सांप की केंचुल की तरह उतरने लगेगी और उसके नीचे से स्वच्छ, कोमल, चमकीली और जवान खाल निकलने लगेगी।

दूसरा महीना-अब केवल गाय के दूध को आधार बनाइये। लहसुन की कलियां सरसों के तेल में भावित करके मालिश कराइये। बुढ़ापे की पुरानी जली-सड़ी त्वचा की जगह नया कोमल शरीर दिखाई देने लगेगा।

तीसरा महीना-दूध से शरीर की सारी दुर्बलता छंट चुकने के बाद रोजाना दो सौ ग्राम लहसुन लेने की बारी है। दस कलियां लहसुन की, दस ग्राम शहद, दस ग्राम बीजरहित मुनक्का और एक ग्राम मीठे आंवले, इन्हें पीसकर चम्मच से खा जाइये। सुबह छह बजे, फिर नौ बजे, तब दोपहर बारह बजे, चौथी खुराक दोपहर तीन बजे लीजिये। पूरा महीना इसी तरह निकाल दीजिये।

इस तरह इक्यानवे दिन में कायाकल्प हो जाएगा। कोई भी यह प्रयोग करके बुढ़ापे में नए सिरे सेजवानी में लौट सकता है। जो काम अमेरिका और रूस के धुरन्धर विद्वान् भी नहीं कर सकते, भारतीय आयुर्वेद के अनुसार आजमाकर कोई भी नर-नारी कायाकल्प कर सकता है।

आँखों के दुखने और कान दर्द में भी इसका प्रयोग किया जाता है। लहसुन में प्याज से अधिक पौष्टिकता पाई जाती है। लहसुन में एक पीले रंग का उड़नशील तेल होता है, जिसे एलिलसल्फाइड कहते हैं। यह लहसुन का तेल हमारे शरीर में पहुँचकर फेफड़ों तथा मूत्रपिंड तथा यकृतगत ऑक्सीजन से मिलकर शरीर में सल्फ्यूरिक एसिड अम्ल उत्पन्न करता है। त्वचा के ऊपरी भाग पर लहसुन का लेप करने पर लहसुन का तेल त्वचागत ऑक्सीजन में मिलकर, सल्फ्यूरिक एसिड में बदलकर हमारे शरीर में आसानी से प्रवेश कर अपना गुण दिखाता है। लहसुन के नियमित प्रयोग से क्षयरोग तक के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। इसकी तीव्र गन्ध ही इसका सबसे बड़ा गुण है। इसकी गंध घातक कीटाणुओं को भी नष्ट कर देती है। इसलिए इसको सभी संक्रामक रोगों—कुष्ठ, टी.बी. (क्षयरोग), उदर व वायु आदि रोगों में औषधियों के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके नियमित प्रयोग से चेहरे पर एक तेजोमय कान्ति आ जाती है, जो चेहरे में आकर्षण पैदा कर देती है।

लहसुन गरीबों के लिए सबसे अधिक सस्ता एंटीबायोटिक और हानिरहित औषधि है। यह पैर के नाखून से लेकर सिर के बाल तक शरीर के प्रत्येक भाग व अवयवों पर अपना रोगनाशक व स्वास्थ्य रक्षक प्रभाव डालता है। जिन व्यक्तियों को दिल का दौरा पड़ चुका हो, रक्तचाप सम्बन्धी परेशानी हो, वे यदि लहसुन का प्रयोग न करते हों, तो तुरन्त ही लहसुन का प्रयोग शुरू कर निश्चिन्त हो जायें। यह कई प्रकार की कैंसर की रसोलियों को ठीक करने की क्षमता रखता है। यह शरीर के कोलेस्ट्रोल के स्तर में भी कमी करता है।

यह हमारे लिए प्रकति का एक उत्तम वरदान है। इसके अनेकानेक लाभ हैं। हम स्वस्थ एवं नीरोग रहते हुए भी इसका उपयोग कर अपना जीवन और सार्थक बना सकते हैं।

पीले-पीले गाल-आम लोगों को मालूम ही नहीं कि बाजारों में बिकने वाले हजार टॉनिक भी लहसुन की पौष्टिकता का मुकाबला नहीं कर सकते। जाड़ों में आप घी खाते हो या मक्खन, दही खाते हो या दूध पीते हो, साथ में अगर पांच तुरी लहसुन की छीलकर चबा लेंगे तो ढाई-तीन महीनों में आपका रंग काबुली पठान की तरह लाल-सुर्ख हो जाएगा। दूध में लहसुन को खीर की तरह पका लें और घी, दही, मक्खन में लहसुन का रस मिलाकर चाटें। लहसुन के साथ दूसरे पदार्थ चौगुनी मात्रा में लें।

क्रमशः अगले अंक में....

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

स्व० श्री महात्मा हंसराज जी महाराज

अपने ग्राम में मैंने केवल एक बार किसी वृद्ध व्यक्ति से सुना था कि लाहौर में एक साधु आया हुआ है, जो ईसाइयों से वेतन पाता है तथा हिन्दू धर्म के विरुद्ध उपदेश करता है। उस समय मुझे यह ज्ञात नहीं था कि यह ऋषि दयानन्द है तथा उनका उपदेश क्या है। मेरी आयु उस समय छोटी थी और न ही विद्या की योग्यता थी। जब मैं सन् 1879 में लाहौर आया तो मेरे बड़े भाई ने जो उस समय डाकघर में कार्य करते थे, मुझे राजकीय विद्यालय में प्रविष्ट करा दिया। उस समय विद्यालय का भवन नहीं था। राजा ध्यानसिंह की हवेली में विद्यालय की श्रेणियां लगा करती थी। सरदार हरिसिंह जो बाद में निरीक्षक (Inspector) होकर विख्यात हुए, मिडल स्कूल के हैडमास्टर थे। मैं कुछ मास उनकी छत्रछाया में विद्याध्ययन करता रहा। फिर बीमार होने के कारण मैंने राजकीय विद्यालय छोड़ दिया। स्वस्थ होने पर भाई साहब ने मुझे यूकल्ड की शिक्षा स्वयं दी और फिर रंग महल में मिशन स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। मैं वहां पढ़ता रहा। बाबू काली प्रसन चटरजी जो बाद में आर्यसमाज के उत्तम सेवक बने, हमारे साथ स्कूल में पढ़ते थे। वह अपनी विनोदप्रियता से हमको हंसाते रहते थे। एक बार उन्होंने उस समय की एक पुस्तक 'रसूमें दिन्द' के कुछ वाक्य पढ़कर बताया कि इसमें हिन्दुओं की कितनी निन्दा की गई है। इस किताब में हिन्दुओं के जो चरित्र दिये गये हैं वे गंवारों और चोरों के हैं। मुसलमानों के चरित्र सज्जन और धनिकों के हैं।

मैंने होशियारपुर स्कूल में संस्कृत अन्य भाषा के रूप में ली। मैं फारसी भी पढ़ता रहा। मिशन स्कूल में संस्कृत और फारसी दोनों का अध्ययन करता रहा। हमारे विद्यालय के मुख्याध्यापक पं० तेजमान थे। वे कहा करते थे कि एक बार उनका स्वामी दयानन्द के साथ वार्तालाप हुआ था। वह वार्तालाप में असफल इसलिए हुआ कि स्वामी दयानन्द ने कई भूत-प्रेतों को सिद्ध किया हुआ था और उनकी शक्ति के कारण विरोधियों को वश में कर लेते थे। मैंने उस समय तक न आर्यसमाज का मन्दिर देखा था और न ही स्वामी जी की कोई पुस्तक पढ़ी थी। आर्यसमाज में उपदेश देने वाले भी बहुत कम थे इसलिये मैंने किसी आर्यसमाजी का व्याख्यान भी नहीं सुना था।

उस समय मिशन स्कूल में दो मास्टर प्रसिद्ध थे। पादरी फोरमैन साहब तो स्कूल के प्रिंसिपल थे। विद्यालय के हाल में सब विद्यार्थियों और अध्यापकों को एकत्रित करके नमाज पढ़ाते और इञ्जील की किसी आयत की व्याख्या करते। विद्यार्थियों के साथ उनका विशेष सम्बन्ध नहीं था। स्कूल के हैडमास्टर श्रीरामचन्द्र दास बड़े योग्य, लड़कों से प्रेम करने वाले, देशप्रेमी तथा उदार हृदय ईसाई थे। सेकिण्ड मास्टर श्री बोस अपने विषय में कोई विशेष योग्यता नहीं रखते थे, परन्तु मिशन स्कूल के लिए धन एकत्रित करने में बड़े निपुण थे। लड़के उनसे विनोद भी कर लेते थे। इसका कारण यह था कि अवकाश देना और शुल्क तथा जुर्माना प्राप्त करना उन का कार्य था। छुट्टी देते समय वे देख लिया करते थे कि उस दिन कोई हिन्दुओं का त्योंहार है अथवा नहीं। उदाहरणत: श्राद्धों के दिनों में जो विद्यार्थी छुट्टी लेता उससे वह दो पैसे प्रतिदिन उगा लिया करते थे। कभी-कभी झगड़ा भी हो जाता। परन्तु अध्यापक महोदय स्कूल की आर्थिक दशा का बहुत ध्यान रखते थे। मेरे सम्बन्ध में उनका यह विचार था कि मैं योग्य विद्यार्थी हूँ, परन्तु साथ ही कुछ चञ्चल भी हूँ, क्योंकि मैं कह दिया करता था कि जिन त्यौहारों में सम्मलित होना ईसाई पादरी ठीक नहीं समझते, उनमें सम्मलित होने का टैक्स लेते हैं। टैक्स लेना उचित नहीं।

एक दिन हमारी दसवीं श्रेणी हैडमास्टर महोदय के पास अंग्रेजी की पुस्तक जिसका नाम सीनियर रीडर (Senior Reader) था, पढ़ रहा था। अध्यापक महोदय जानते थे कि मैंने हजरत ईसा के जीवन चरित्र की पुस्तक, जो हमारा कोर्स था अच्छी प्रकार पढ़ा हुआ है। अत: इस पुस्तक में से मुझसे बहुधा प्रश्न किया करते थे। मैं उनका सन्तोषपूर्ण उत्तर दे देता था और वे मुझ से प्रसन्न थे। सीनियर रीडर में प्रथम पाठ यह था कि संसार को बने हुए छः हजार वर्ष व्यतीत हुए हैं। जो मनुष्य आरम्भ में हुए उनका अनुभव वर्तमान मनुष्यों की अपेक्षा बहुत कम था और इसलिये उनकी योग्यता और विद्या वर्तमान समय की अपेक्षा बहुत कम थी।

हैडमास्टर महोदय ने मुझ से पूछा कि हंसराज! क्या यह सच है? मैंने बचपन की चञ्चलता में अध्यापक महोदय पर एक उल्टा प्रश्न कर दिया। मैंने पूछा कि क्या पिता का अनुभव अधिक होता है या पुत्र का? इसका उत्तर अध्यापक महोदय क्या दे सकते थे। यह तो नहीं कह सकते थे कि पिता का अनुभव कम होता है। वे कुछ तंग से हो गये। उन्होंने

कहा–''प्राचीन हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान नहीं था। वे अग्नि, वायु, जल और सूर्य आदि की पूजा किया करते थे।'' मैंने कहा–''श्रीमान्! यह बात ठीक नहीं। 'कसिस हिन्द' में मैंने पढ़ा हुआ था कि हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान था। वे परमेश्वर को मानते थे जिसके पांव नहीं, परन्तु प्रत्येक स्थान पर पहुंचता है। उसके हाथ नहीं परन्तु सब ग्रहण करता है, इत्यादि।'' मैंने सब कुछ सुना दिया। इसका उत्तर क्या बन सकता था। परन्तु मुझे यह पता नहीं था कि अग्नि, वायु की पूजा के सम्बन्ध में ठीक विचार क्या है। मैंने यूं ही यह सनातनी उत्तर दे दिया कि प्राचीन आर्य लोग इन भूतों के द्वारा परमेश्वर की पूजा किया करते थे न कि भूतों की। हैडमास्टर महोदय संस्कृत से अनभिज्ञ थे, वे क्या कह सकते थे। अन्त में उन्होंने कहा कि देखो इस रीडर में यह लिखा है और इसलिए यह सत्य है, यह उनकी युक्ति थी। मैंने तुरन्त कह दिया कि रीडर बनाने वाले की मूर्खता है जो उसने ऐसा लिख दिया। इस पर उन्होंने मुझे तीन-चार बेंत लगाये और कक्षा से बाहर कर दिया। मैं बाहर निकल आया और अगले दिन सैकिण्ड मास्टर साहब के पास गया और कहा कि हैडमास्टर महोदय के पास शिफारश करके मुझे कक्षा में सम्मलित होने की आज्ञा दें। वे बंगाली तो थे ही। उर्दू अच्छी प्रकार नहीं बोल सकते थे, कहा, ''हंसराज! मैं तो पहले ही समझता था कि तुम चञ्चल हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था, मैं प्रयत्न करूंगा।'' दो-तीन दिन में मुझे कक्षा में बैठने की आज्ञा मिल गई और मैंने भी अपने हृदय में यह ठान लिया कि मैं श्रेणी में ईसाई मत के विरुद्ध कुछ नहीं कहूँगा। वास्तविकता यह थी कि मैं अपनी कक्षा में एक योग्य छात्र था और हैडमास्टर भी मुझसे प्रेम करते थे। यदि मैं भूल नहीं करता, तो उस साल मिशन स्कूल में 17 छात्रों में से केवल मैं ही मैट्रिक में उत्तीर्ण हुआ।

श्री रामचन्द्र दास का प्रेम मेरे साथ बहुत था। उनके देश प्रेम की बातों को हम बहुत पसन्द करते थे। यद्यपि वे ईसाई थे फिर भी मेरे हृदय में उनका बड़ा आदर था। यह जानते हुए भी कि मैं आर्यसमाजी हूँ और इसाई मत की शिक्षा को अशुद्ध समझता हूं, वे बहुत बार यही कहा करते थे कि मुझे अपने विद्यार्थी हंसराज पर बड़ा गर्व है। मैं भी जब कभी उनसे मिलता था तो उनके घुटनों पर हाथ लगाकर उनको नमस्ते कहता था। एक बार मैंने उनकी सेवा में मिठाई अर्पित की और उन्होंने उसे स्वीकार कर मुझे सम्मानित किया।

प्रधानाध्यापक महोदय के साथ मेरा जो विवाद हुआ था उससे मेरे हृदय पर विशेष प्रभाव पड़ा और मुझे यह जानने की इच्छा हुई कि क्या हमारे पूर्वज प्रकृति के उपासक थे अथवा केवल ईश्वर को ही मानते और पूजते थे। अत: मैंने इधर-उधर पूछकर आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। मैं आर्यसमाज के उपदेशों को सुनता और पत्रों को पढ़ता। लाहौर समाज के प्रधान स्वर्गीय ला० सांईदास जी की दृष्टि नये व्यक्तियों पर जो समाज में आवें, बड़ी जल्दी पड़ती थी। उन्होंने मुझे बुलाया और आज्ञा दी कि मैं सन्ध्या याद कर लूँ।

उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने के लिये यह सूचना भी दे दी कि जो विद्यार्थी उनको सन्ध्या कण्ठस्थ सुना देगा, उसको वे पारितोषिक देंगे। मैंने संध्या उन्हें सुना दी और उनसे दो रुपया पारितोषिक के रूप में प्राप्त कर लिया। मैं समाज के साप्ताहिक सत्संगों से कभी अनुपस्थित नहीं होता। यद्यपि समाज में उपदेश पं० अखिलानन्द जी के और पं० मूलराज जी के हुआ करते थे और उनका भाषण देने का ढंग इस इस प्रकार था कि प्रथम का तो वाक्य कभी समाप्त ही नहीं होता था और दूसरे महोदय की एक मन्त्र की व्याख्या दूसरे मन्त्र की व्याख्या से कदापि भिन्न न होती थी। इनके पश्चात् भाई दत्तसिंह जी श्री जौहरसिंह जी के लैक्चर सिख इतिहास और ईसाई मत का खण्डन बड़े आनन्द से सुनते थे। उस समय ये दोनों महोदय आर्यसमाज के सदस्य और लैक्चरर थे और आर्यसमाज में उनका अच्छा मान था। बाद में विशेष कारणों से वे आर्यसमाज के कट्टर विरोधी बन गये। मुझे साप्ताहिक सत्संग में सम्मलित होने की इतनी लग्न थी कि मैं समाज के सत्संगों से अपने मैट्रिक की परीक्षा के दिनों में भी अनुपस्थित नहीं रहा।

[**नोट**-आर्यसमाज की विचारधारा सामाजिक कुरीतियों की नाशयित्री और बौद्धिक क्रान्ति की प्रकाशिका है। इसके वैदिक विचारों ने अनेक के हृदय में सत्य का प्रकाश किया है। इस लेख के माध्यम से आप उन विद्वानों के बारे में पढ़ेंगे जिन्होंने आर्यसमाज को जानने के बाद आत्मोन्नति करते हुए समाज को उन्नतिशील कैसे बनायें, इसमें अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। ये लेख स्वामी जगदीश्वरानन्द द्वारा सम्पादित 'वेद-प्रकाश' मासिक पत्रिका के 1958 के अंकों में 'मैं आर्यसमाजी कैसे बना ?' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुए थे। प्रस्तुति- प्रियांशु सेठ]

(साभार-फेसबुक)

विश्वगुरु भारत की संस्कृति के चिह्न विश्व के देशों में आज भी प्रासंगिक है—एक विवरण

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक, मो० 9411512019, 9557641800

संस्कृति समाज की प्रचलित विचारधारा का मूल्यांकन करती है और सभ्यता वस्तु की उपयोगिता को मापती है। भारत का सांस्कृतिक इतिहास देखने से स्पष्ट हो जाता है कि भारत की संस्कृति आदि काल से संसार की अनेक संस्कृतियों के सम्पर्क में आई है और प्रतिस्पर्धा संघर्ष तथा विद्वेष की जगह या तो अन्य संस्कृतियों को आत्मसात् कर गयी है या अन्य संस्कृतियां इसके सामने विलीन हो गयी है।

सभ्यता तथा संस्कृति में भेद यह है कि सभ्यता भौतिक है और संस्कृति आध्यात्मिक है, सभ्यता आगे-आगे विकसित होती जाती है और संस्कृति पीछे भी जाती है, टिकी भी रह सकती है। संस्कृतियों का आदान-प्रदान तथा संघर्ष होता है। भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों के सम्पर्क में आई, कभी जंगलियों के, कभी मुगलों के, कभी अंग्रेजों के सम्पर्क में आई, किन्तु अन्य संस्कृतियों को प्रभावित करती रही, किसी के सामने झुकी नहीं। संसार के इतिहास में कई संस्कृतियां उत्पन्न हुई, परन्तु आज उनका नाम लेने वाला भी कोई नहीं है। एक भारत की ही संस्कृति है, जो आदिकाल से अनेक झंझटों में से गुजरती हुई आज तक भी जीवित है व अनन्तकाल तक रहेगी।

भारत अपनी संस्कृति को लेकर जहां-जहां गया वहां इतना हावी हो गया कि सब जगह भारत की विचारधारा ही बहने लगी। यह भारत की सांस्कृतिक विजय थी। यह विचारधारा तब ही सूखी जब विदेशी आक्रमणों के कारण उस संस्कृति का स्रोत भारत में ही सूखने लगा।

विदेशों में भारतीय संस्कृतियां

सीलोन तथा भारतीय संस्कृति— भारतीय संस्कृति का सबसे अधिक लाभ सीलोन को मिला। बौद्ध धर्म के साथ शैव तथा वैष्णव धर्म भी सीलोन में पहुंचा था।

वर्मा और आसाम तथा भारतीय संस्कृति— बौद्ध धर्म के अतिरिक्त वर्मा में गणेश की भी मूर्ति मिली।

कम्बोज तथा भारतीय संस्कृति— कम्बोज में एक मन्दिर है 'अंकोरवट' इस मन्दिर में रामायण तथा महाभारत के चित्र पाये जाते हैं।

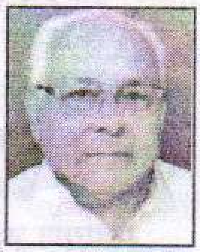

सुमात्रा तथा भारतीय संस्कृति— सुमात्रा के राजा ने अपने यहां बौद्ध विहार बनवाया था।

जावा तथा भारतीय संस्कृति— जावा में दो मन्दिर है, परमवनम् तथा बोरोबुदुर में रामायण के चित्र हैं, वहां दो राजधर्म थे—शैव तथा बौद्ध। इस मन्दिर का निचला हिस्सा शिव का तथा ऊपर का हिस्सा बुद्ध का है।

बाली तथा भारतीय संस्कृति— बाली में वहां के लोग चतुर्वेद-शब्द का प्रयोग करते हैं, उनका अभिप्राय नारायणावर्णेपरिषद् से है अभिप्राय है कि चारों वेद क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद कहते हैं।

चीन तथा भारतीय संस्कृति— चीन के 100 बौद्ध ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

जापान तथा भारतीय संस्कृति— जापान के राजा शोटिकू ने 593 ईस्वी में जापान का जो संविधान बनाया उसमें बुद्ध धर्म और संघ को धर्म का लक्ष्य घोषित किया।

तिब्बत और भूटान में भारतीय संस्कृति— तिब्बत से बौद्ध धर्म भूटान पहुंचा तिब्बत में ओं मणि पदने हुकहुम- यह मंत्र संस्कृत का अभ्रंश वाक्य पढ़ा जाता है।

ईष्टर्न तुर्किस्तान तथा भारतीय संस्कृति— दक्षिण में सीलोन पूर्व में कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा, बाली, उत्तर में चीन, तिब्बत, भूटान, खोतान, वारकन्द और कासगर तक भारतीय संस्कृति क विस्तार हुआ।

ईरान तथा भारतीय संस्कृति— पारसियों के धर्म पुस्तक 'होमवष्ट' में शन्नोदेवी रभिष्टय मंत्र का उल्लेख है, अथर्ववेद को सूचित करने के लिए महाभाष्य में यह मंत्र दिया गया है।

अफगानिस्तान तथा भारतीय संस्कृति— यहाँ त्रिनेत्र-शिव तथा शिव विष्णु की संयुक्त मूर्ति मिली है, जिसमें विष्णु का चक्र तथा इन्द्र का बज्र दिखाया गया है।

अरब तथा भारतीय संस्कृति—अरब में भी इस्लाम है, परन्तु वहां की संस्कृति को भी भारत ने प्रभावित किया है।

मिस्र तथा भारतीय संस्कृति—यहां बुद्ध की शिक्षाओं तथा ईशामसीह की शिक्षाओं में अभूतपूर्व समानता है।

यूनान (ग्रीस) तथा भारतीय संस्कृति—इतिहास पढ़ने से विदित होता है कि भारत तथा ग्रीस का आपस में सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ था।

कुछ अन्य प्रमाण भारत व बाहर के देशों के साथ सम्बन्धों के प्रमाण मिले हैं।

रामायण तथा गणेश के विभिन्न देशों के प्रमाण

चीन में रामायण, इण्डोनेशिया में रामायण, जावा में रामायण, पनतरन में रामायण, कम्बोडिया में रामायण, थाईलैंण में रामायण, अफगानिस्तान में गणेश, सीलोन में गणेश, नेपाल में गणेश, खोतान में गणेश, मंगोलिया में गणेश, थाईलैंड में गणेश, कम्बोडिया में गणेश, चम्पा में गणेश, जावा में गणेश, बोर्नियो में गणेश, चीन में गणेश, जापान में गणेश।

भारतीय लोग जिस काल तथा देश में गये उनके अनुसार रामायण और भारतीय संस्कृति का विस्तार होता चला गया। भारतीय व्यापार की दृष्टि से तो गये थे तथा अपनी संस्कृति को भी साथ लेते गये। यही कारण है कि कम्बोडिया तथा जावा के शैव मन्दिरों पर रामायण के चित्र अंकित होने के कारण बौद्ध मन्दिरों पर भी चित्र अंकित हैं।

भारत की भौगोलिक सीमा को यहाँ की संस्कृति सीमा पार कर गयी थी। जैसे आज भौतिकवाद, देशों को लांघ कर भूमण्डल पर छा गया है, वैसे ही भारत का आध्यात्मवाद यहां की संस्कृति सार्वभौम हो गयी थी। विचारों की यह गंगा जो देश-विदेश की सूखी नदियों को हरा-भरा करती थी, जिससे कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा, बाली में रामायण तथा महाभारत का सन्देश पहुंचा। आज संसार के लोग भौतिकवाद से तंग आ चुके हैं। भारत ऋषि-मुनियों का देश है। सम्पूर्ण संसार आत्मा की शान्ति तथा सुखद क्षण के लिए भारत की ओर देख रहे हैं, समय आ गया है भारत विश्वगुरु को सार्थक करने के लिए वैदिक सन्देश को संसार में प्रचारित करने का जिससे भारत विश्वगुरु का सम्मान सुरक्षित रख सकेगा।

नोट—यह संक्षिप्त लेख पाठकों को अपनी संस्कृति की महता की धरोहर को समझने के लिए सांकेतिक रूप में लिखा है। अत एव स्वध्याशील पाठक पूर्ण उपयुक्त विवरणों को जानना चाहते हैं, तो वैदिक संस्कृति का सन्देश (जो लेखक प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार) ग्रन्थ से प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)

वृद्धावस्था में सन्तोष सब्र

जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो।
कष्टों से भरा जीवन है, हँसकर इसको सहलो॥ टेक॥
जीवन एक नाटक है, हम उसके पात्र हैं।
खेल खिलाता ईश्वर, हम तो दर्शक मात्र हैं।
जो होना है वह होगा, चुपचाप यह सब सहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 1॥
जीवन जी लिया अपना, कोई अरमान नहीं बाकी।
वृद्धावस्था भी जीवन की, है मधुर झांकी।
जैसे भी हालात हों, उन में ही खुश रहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 2॥
अब नहीं कोई जिम्मेदारी, नहीं कोई बन्धन है।
ईश्वर का चिन्तन ही, वृद्धों का अभिनन्दन है।
अब शेष जो जीवन है, उसे ईश्वर की कृपा कहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 3॥
प्रयास करें बुढापे में, हम पराश्रित न हों।
हाथ-पैर चलते रहें, बुद्धि भ्रमित न हों।
दुःख-दर्द भी हो जाये, स्वयं ही उसे सहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 4॥
कितने ही प्रियजन अपने, अब नहीं जीवित हैं।
धन्यवाद करें ईश्वर का, हम अब भी जीवित हैं।
हम इस जग में हैं, इसे अपना पुण्यकर्म कहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 5॥
आया है सो जाएगा, यह रीति चली आई।
पोते नाती के संग हमने, मौज भली पाई।
लम्बी आयु मिली हमें, रब्बा की कृपा कहलो।
जिस हाल में रखे रब्बा, उसमें ही खुश रहलो॥ 6॥

—देशराज आर्य, सेवानिवृत प्रधानाचार्य,
म०नं० 725, सै०-4, रेवाड़ी, मो० 9416337609

हम क्यों हारे ? दास्तान-ए-गद्दारी (5)

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

''तुम लोग धोखे में आ गये हो। गुरु गोविन्दसिंह के उपदेश को तुमने मिट्टी में मिला दिया है। हमारे शत्रु फूट डलवाकर हमें नष्ट कर देंगे। सोचो, यह समय फिर नहीं लौटेगा। मैं तो साधु हूँ, मेरा क्या बिगड़ेगा ? तुर्क तुम्हारे धर्म को और तुम्हें नष्ट कर देंगे। तुम्हारा सर्वस्व जाता रहेगा। आओ, पहले शत्रु से निपट लें, फिर आपस की लड़ाई का फैसला कर लेंगे।''

परन्तु स्वार्थ में अन्धों को कुछ दिखाई व सुनाई नहीं दिया। खाद्य सामग्री के अभाव में 17 दिसम्बर 1715 को वैरागी ने किले का द्वार खोल दिया। 740 सैनिकों के साथ भूखे शेर को पिंजरे में डाल दिया गया। दिल्ली ले जाकर उन्हें तड़पा-तड़पाकर मारा गया। 19 जून 1716 को वैरागी के शरीर में गर्म सलाखें घुसेड़ दी व संडासियों से मांस नोंचा गया। उनके 3-4 वर्ष के बच्चे अजय की भी निर्दयता पूर्वक हत्या कर दी गई।

तब केवल बन्दा वैरागी की ही आँखें बन्द नहीं हुई थी, सिख साम्राज्य स्थापित करने का सपना भी टूट गया था। वैरागी को गिरफ्तार करने वाले अब्दुलसमन्द खाँ तुरानी को लाहौर का शाक बनाया गया। उसने सिखों की जागीरें जब्त कर लीं और जमीन का लागान दुगुना कर दिया, सिख नौकरों का वेतन आधा कर दिया। मुस्लिम जनता की तरफ से सिखों के विरुद्ध चोरी, हत्या आदि की शिकायतें जमा होने लगी। सिख का सिर काटकर लाने का पुरस्कार (दस रुपये) मिलता था। कइयों ने भागकर राजपूताने की रियासतों में आश्रय लिया और कई जगह-जगह भटकने लगे। गुरुद्वारे उजड़ गए। दीपावली का त्यौहार बन्द हो गया। हिन्दू फिर से मुसलमान होने लग गए। कुछ समय तक ऐसी ही दुर्दशा रही। विस्तार से जानने के लिए लेखक की पुस्तक 'हिन्दू इतिहास—वीरों की दास्तान' पढ़ें। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें—**श्री दिनेश कुमार शास्त्री, 9650522778**

प्रिय पाठकवृन्द! औरंगजेब के काल में हिन्दुत्व तेज ने ऐसा उभारा लिया कि मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य धीरे-धीरे विस्तार को पाने लगा। पेशवा बाजीराव (प्रथम) के नेतृत्व में मराठों ने दिल्ली के मुगल शासक मुहम्मद शाह 'रंगीला' को सन्धि करने को विवश कर दिया (1737 ई०)। यदि बाद में मराठा वीर छत्रपति शिवाजी की हिन्दुत्व भक्ति वाली नीति का पालन करते, तो मराठों को उत्तरी भारत में राजपूतों, जाटों आदि का सहयोग मिलता। फिर सम्पूर्ण भारत में हिन्दुत्व का राज्य होता, क्योंकि मुगल सत्ता तो उखड़ी पड़ी थी और अंग्रेज अभ तक केवल अपने व्यापारिक लाभ तक ही सीमित थे। देखिये—

25. ईरान के शासक नादिरशाह ने कन्धार को जीतकर दिल्ली में मुहम्मद शाह के पास दूत भेजा कि उसके विद्रोही अफगानों को भारत में शरण न दी जाए, पर मुगल सैनिकों ने दूत की हत्या कर दी। इससे क्रोधित हो पेशावर, लाहौर आदि को जीतकर नादिरशाह दिल्ली की ओर बढ़ चला। जब शत्रु इतना अन्दर घुस आया, तो घबराया मुहम्मद शाह हैदराबाद (दक्षिण) के निजाम उलमुल्क और बड़ी भारी सेना के साथ करनाल पहुँचा। अवध का सूबेदार बुरहान उलमुल्क (सआदत खां) उनकी सहायता के लिए आ रहा था, तो उस पर नादिरशाह की सेना ने आक्रमण कर दिया। 24 फरवरी 1739 की मात्र तीन घण्टे की लड़ाई में मुहम्मद शाह का मीर बख्शी (खान दौरान) मारा गया व सआदत खां कैद कर लिया गया।

निजाम (हैदराबाद) ने शान्तिवार्ता के लिए नादिरशाह से भेंट कर कहा कि मुगल सम्राट उसे 50 लाख रुपये देगा, जिसमें 20 लाख नकद होंगे। नादिरशाह सहमत हो गया। इस सन्धि से खुश होकर मुहम्मद शाह ने निजाम को मीरबख्शी का पद दे दिया। इससे नाराज होकर सआदत खां ने नादिरशाह से भेंट कर कहा कि यह वह दिल्ली पर आक्रमण करे, तो उसे बीस लाख की बजाय 20 करोड़ रुपये मिल सकते हैं। यह सुनकर नादिरशाह ने मुहम्मद शाह और निजाम आदि को बुलाकर धोखे से कैद कर लिया। उन कैदियों के साथ ईरानी सेना दिल्ली की ओर

बढ़ी। नादिरशाह के दिल्ली पहुँचने पर जनता ने विद्रोह कर दिया, तब नादिर ने लूटपाट व कत्लेआम का हुक्म दे दिया। लगभग 30 हजार आदमी कत्ल कर दिए गए। सआदत खां पर 20 करोड़ रुपये का दबाव बनाया गया व उसे कैद में डाल मर्मान्तक पीड़ा दी गई। अन्त में जहर देकर मार दिया गया।

2 महीने तक दिल्ली का खूब शोषण कर 70 करोड़ की धनराशि, तख्ते ताऊस और कोहिनूर हीरे के साथ नादिरशाह ईरान लौट गया। मुहम्मद शाह को उसकी जान और बादशाहत बख्श दी। ये थे दिल्ली के मुगल बादशाह जिन्हें कम्युनिस्ट लेखकों ने भारत के रक्षकों के रूप में प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को दिग्भ्रमित किया है।

26. नादिरशाह की हत्या (1747 ई०) के बाद अहमद शाह अब्दाली कंधार का स्वतन्त्र शासक बना। धीरे-धीरे अफगानिस्तान को जीतकर व अफगानों का नेता बनकर उसने पंजाब (भारत) पर हमले शुरू कर दिये। चौथी बार (1756 ई०) वह दिल्ली तक बढ़ गया। इमाद को कुछ न सूझा कि क्या करूँ। गृहयुद्ध के बाद दिवालियापन में दिल्ली की सेना तितर-बितर हो चुकी थी। मराठे दक्खिन चले गये थे। इमाद ने नजीबखां (रुहेलखण्ड), महाराजा सूरजमल (भरतपुर) और शुजाउद्दौला (अवध) से मदद मांगी, पर बेकार। ग्वालियर से अन्ताजी माणकेश्वर अपनी तीन हजार की टुकड़ी के साथ उसकी सहायता को आया कि जो कुछ भी प्रतिरोध हो सके किया जाए।

अब्दाली के नजदीक आने पर रुहेले (नजीबुद्दौला आदि) उससे जा मिले। कायर इमाद चुपके से निकला और अब्दाली की छावनी में जाकर आत्म-समर्पण कर दिया (19.01.1757)। रुहेलों के बीच मुश्किल से रास्ता काटते हुए अन्ताजी दिल्ल के दक्खिन फरीदाबाद तक हट गया। अब्दाली ने दिल्ली में प्रवेश किया और नादिरशाह की तरह शहर के धन और इज्जत की मुहल्लेवार लूट शुरू की। बड़े-बड़े अमीर उमरावों को साधारण चोरों की तरह यातनाएं दी गईं।

20,000 अफगान सवारों ने फरीदाबाद में अन्ताजी को एकाएक घेर लिया। दिन भर लड़ने और अपनी तिहाई सेना कटाने के बाद वह घेरा तोड़कर मथुरा जा निकला। वहाँ उसने महाराजा सूरजमल से कहा—आओ मिलकर मुकाबला करें। पर सूरजमल तैयार न हुआ और जब 22 फरवरी को अब्दाली दक्खिन बढ़ा, तब सूरजमल ने कुम्भेरगढ़ में शरण ली। व्रज में घुसते ही अब्दाली ने अपनी सेना को खुली लूट की इजाजत दे दी। ''सूरजमल व्रज कह यह बर्बादी कुम्भेर से देखता रहा।'' किन्तु उसके बेटे जवाहरसिंह ने कहा कि जाटों की लाशों के ऊपर से अफगान भले ही व्रज में घुसें, ऐसे ही न घुस पायेंगे। 10 हजार जवानों के साथ जवाहर ने मथुरा का रास्ता रोका। उस टुकड़ी के काटे जाने पर वह थोड़े-से साथियों के साथ बचकर निकल गया और अफगानों ने मथुरा में प्रवेश किया। (जयचन्द विद्यालंकार, भारतीय इतिहास का उन्मीलन, पृ० 576)

आगरा में सड़ती लाशों के कारण हैजा फैलने से अब्दाली वापस चला गया। जाते हुए वह दिल्ली में नजीब खां रुहेले को अपना प्रतिनिधि नियत कर गया और पंजाब का शासन अपने बेटे तैमूर और सेनापति जहानखाँ को सौंपकर कई करोड़ की लूट के साथ अफगानिस्तान लौट गया। कुछ ही समय बाद मराठों ने पंजाब से तैमूर को मार भगाया और अब्दाली से लड़ने के लिए सबको संगठित होने का आह्वान किया। सदाशिवराव भाऊ ने राजपूत राजाओं को मनाने की कोशिश की, पर उन लोगों ने तटस्थ रहना ही तय किया। केवल महाराजा सूरजमल ही साथ आए, पर युद्ध लड़ने में उनकी सलाह नहीं मानी गई, तो वे भी अलग हो गए। जबकि विदेशी लुटेरे अब्दाली के साथ नजीबुद्दौला के रुहेले तो थे ही, मराठों का मित्र अवध का नवाब शुजाउद्दौला भी मजहबी प्रेम से उससे जा मिला।

14 जनवरी 1761 ई० को पानीपत के मैदान में लड़े इस युद्ध में अब्दाली के 62,000 सैनिकों के मुकाबले में भाऊ के 45,000 सैनिक थे। वे भी भूखे-प्यासे। मराठे पूरी वीरता से लड़े, पर (मल्हारराव होल्कर का) दाहिना पहलू लड़ा ही नहीं। उसके सामने नजीब था, जिसे मल्हार अपना बेटा कहता था, उन्होंने आपस में समझौता कर लिया और मल्हार मैदान से भागकर भरतपुर चला गया। सिंधिया ने पांव घायल होने के कारण मैदान छोड़ दिया। मराठों के लगभग 28,000 सैनिक मारे गए। यद्यपि अब्दाली की सेना

शेष पृष्ठ 16 पर....

स्वतन्त्र भारत में हमने क्या पाया?

—राजवीर आर्य (मुरादाबाद)

"विदेशी राज्य चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो स्वदेशी राज्य की तुलना में कभी अच्छा नहीं हो सकता," सत्यार्थप्रकाश की अमृत मणियों के आर्ष आभूषण से प्रकाशित होती यह आदित्य समान, स्वर्णयुक्त, जीवनदायिनी, पंक्ति ऋषि दयानन्द को स्वतन्त्रता की जटिलता और उपादेयता में सबसे विरल और उत्तम कोटि में स्थापित करती है।

स्वराज्य का प्रथम स्वर और आधुनिक भारत के निर्माण की आधारशिला केवल ऋषि दयानन्द ही परिभाषित कर पाए। किन्तु देश का दुर्भाग्य रहा कि ऋषि दयानन्द, भारत के नीति निर्माताओं के विमर्श में कभी रहे ही नहीं। स्वतन्त्रता का पहला घोष करने वाला और अनेक क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्रोत, महर्षि केवल भित्ति चित्रों की शोभा बन गृह प्रकोष्ठों में विद्युत् दीपों से ही आभासित पाया जाता है।

आधुनिक भारत के निर्माण के हेतु संविधान की रूपरेखा निश्चित करने वाले, बाल ब्रह्मचारी की कृतियां केवल कुछ पुस्तक प्रेमियों की कपाटिकाओं में ही प्रदर्शित होती हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रभृति यदा गद्य-पद्य की वीथिकाओं में फारसी और हिन्दी की मुष्टा-मुष्टी द्वन्द्व से भयभीत, संवाद की बोली खोज रहे थे तदा महर्षि दयानन्द ने निर्भय हो, आर्यभाषा के द्वारा देवी वाक् संस्कृत को देश की भाषा स्थापित करने का यत्न आरम्भ कर दिया था।

आर्यभाषा की आधारभूत रचना और व्याकरण संरचना संस्कृति की परिधि से निर्मित थी, जिसका विरोध किसी भी देशज बोली से नहीं था, किन्तु हमने ऋषि की कब माननी थी, इसी का दु:खद परिणाम फारसीनिष्ठ उर्दू के आवरण से सज्जित हिन्दी देश की बोली के रूप में प्रचलित हो गई।

कालक्रमेण, हिन्दी के उद्भव काल से विभाजन के जो बीजवपन किए थे, उन्होंने अपने दुष्परिणाम, दक्षिण और उत्तर भारत का विभाजन हिन्दी और गैर हिन्दी क्षेत्र के रूप में कर दिया। देश विभाजन की आधारशिला भी हिन्दी के उदय के साथ ही पड़ गई थी।

संस्कृत से अनुप्राणित संस्कृति और उससे स्पन्दित राष्ट्र की आत्मा के आधार वेद ऋचाओं को, क्रान्तद्रष्टा ऋषि ने पुन: अपने प्राचीन कलेवर में विभूषित कर सुप्त राष्ट्र को चिरनिद्रा से उठाने का प्रकल्प आरम्भ किया था। किन्तु वेद शिक्षा के आधार गुरुकुलीय व्यवस्था को अस्वीकार कर नीति निर्धारकों ने मदरसा छाप स्कूली शिक्षा को अपनाकर जीर्ण होते राष्ट्र को Nation में परिवर्तित कर दिया। इसी केकारण राष्ट्र प्रेम किसी प्रदर्शनी के रेखा चित्रों-सा देखा जाने लगा और हम भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रीय अवधारण से इतर पश्चिम के समान विभिन्न जातीय, मत, बोलियों के आधार पर भारत राष्ट्र में हिन्दुस्तान Nation को जीवन्त करने लगे।

अत: स्वतन्त्रता के अमृत वर्ष को आजादी का अमृत महोत्सव नामकरण हमारे हिन्दुस्तान Nation होने की स्वीकृति है न कि भारत राष्ट्र की।

अत: ऋषि के मतानुसार जब तक हमारे राजकीय व्यवस्था चलाने वाले वेदज्ञानी न होंगे तब तक Nation और विभाजन हमारी परिणति रहेगी।

यदि राष्ट्र बनाना है तो ऋषियों की परम्परा ही एकमात्र आवलम्बन है और महर्षि दयानन्द उसका सोपान हैं।

(दयानन्द सन्देश से साभार)

NDA/TES में गुरुकुल के छात्रों ने तोड़े सारे रिकॉर्ड

कुरुक्षेत्र-गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने पुराने सभी रिकार्ड को तोड़ते हुए इस वर्ष एन.डी.ए./टी.ई.एस. में 17 रिकमंडेशन लेकर कामयाबी की नई मिसाल कायम की है। पिछले वर्ष की बात करें तो गुरुकुल के 14 छात्रों का चयन एन.डी.ए./टी.ई.एस. में हुआ था जो अब भारतीय सेनाओं में उच्च अधिकारी पद की ट्रेनिंग ले रहे हैं। छात्रों की शानदार सफलता पर पूरे गुरुकुल में उत्साह का माहौल है। महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने इसके लिए छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए निदेशक ब्रिगेडियर डॉ. प्रवीण कुमार, प्राचार्य सूबे प्रताप, मुख्य संरक्षक संजीव आर्य, एनडीए विंग के सूबेदार बलवान सिंह, अशोक कुमार चौहान इंस्ट्रक्टर कोर्डिनेटर को विशेष बधाई दी है।

निदेशक ने बताया कि महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने देश सेनाओं को कर्मनिष्ठ, ईमानदार और देशभक्ति के जज्बे से परिपूर्ण उच्च अधिकारी देने का जो सपना संजोया था, वह अब पूरा हो रहा है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में एनडीए के माध्यम से छात्र भारतीय सेनाओं में जा रहे हैं। वर्ष 2016 से शुरु हुआ यह सिलसिला निरन्तर जारी है और अब तक गुरुकुल के 61 छात्र भारतीय सेनाओं में चयनित हो चुके हैं। केवल भारतीय सेना ही नहीं अपितु मेडिकल, इंजीनियरिंग में भी गुरुकुल के छात्र पीछे नहीं है, एनआईटी, आईआईटी, नीट में भी गुरुकुल के 105 से अधिक छात्रों का चयन हुआ है। कुल मिलाकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र छात्रों के उज्वल भविष्य की गारंटी का एक प्रमुख संस्थान बनकर उभरा है और अभिभावकों के इस भरोसे को भविष्य में भी गुरुकुल प्रबंधन इसी प्रकार कायम रखेगा।

वेदसम्मत गृहाश्रम का निर्वाह ही दम्पति के जीवन की सफलता है

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001 फोन-9412985121

युवक व युवतियों के वैदिक विधि से विवाह होने से पति व पत्नी गृहस्थी कहलाते हैं। विवाह के बाद का जीवन गृहस्थ जीवन तथा इसे ही गृहाश्रम भी कहते हैं। गृहस्थाश्रम पर लोगों के तरह-तरह के विचार हैं। कोई गृहाश्रम को अच्छा मानता है और ऐसे भी लोग हैं जो इस आश्रम को अन्य तीन आश्रमों की तुलना में हेय मानते हैं। गृहस्थ आश्रम की महत्ता का निर्णय वेदों के परम विद्वान् ऋषि दयानन्द के वचनों से होता है। यह वचन सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास की समाप्ति पर कहे गये हैं। ऋषि दयानन्द जी कहते हैं कि जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम कहां से हो सकते? जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। परन्तु गृहाश्रम में सुख तभी होता है जब स्त्री-पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। इसलिये गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और स्वयंवर विवाह है। ऋषि दयानन्द जी ने पूर्वोक्त पंक्तियों में गृहाश्रम की प्रशंसा व महत्ता में जो कहा है वह पूर्णत: सत्य एवं सबके लिए ग्राह्य है।

गृहाश्रम एक सामाजिक एवं धार्मिक बन्धन है जिसके अनुशासन में रहकर मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सिद्ध करने सहित देश व समाज के लिये हितकारी कार्यों को करता है, समाज को वेदानुसार चलाने में सहायक होता है, सृष्टिक्रम अवरुद्ध नहीं होता, मनुष्य सुख भोगता है, स्त्री व पुरुष गृहाश्रम में ऋषि, देव तथा पितृऋण से अनृण होते हैं। देश व समाज की उन्नति का मुख्य आधार भी वेदोक्त गृहाश्रम एवं विवाह आदि व्यवस्थायें हैं तथा वैदिक जीवन से ही गृहाश्रम व मनुष्य जीवन की सफलता है। इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि,हमारे याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों सहित हमारे महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगेश्वर श्रीकृष्ण भी गृहस्थी थे। जिस मनुष्य का अपनी सभी इन्द्रियों पर संयम होता है और जो वेदानुसार जीवन व्यतीत करता है, ऐसे सभी मनुष्य सद्गृहस्थी व ब्रह्मचारी ही होते हैं। गृहस्थाश्रम का विधान है कि उन्हें प्रतिदिन पंचमहायज्ञ करने चाहियें। यह

यज्ञ हैं 1. ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सन्ध्या, 2. देवयज्ञ अग्निहोत्र जो वायु-जल शुद्धि सहित ईश्वरोपासना के लिए किया जाता है, 3. पितृयज्ञ अर्थात् माता-पिता की सेवा शूश्रुषा, 4. अतिथि यज्ञ अर्थात् देश व समाज के हितकारी विद्वान् जो सामाजिक उन्नति में जीवन व्यतीत करते हैं, उनके घर आने पर उनकी सम्मानपूर्वक सेवा तथा 5. बलिवैश्वदेव यज्ञ करना होता है। बलिवैश्वदेव यज्ञ में मनुष्य को न केवल मनुष्यों के प्रति अपितु सभी प्राणियों व पशु आदि के प्रति भी प्रेम, स्नेह, ममता तथा पूर्ण अहिंसा का व्यवहार करना होता है। इसका अर्थ है कि किसी भी प्राणी की बिना उचित कारण से हिंसा निषिद्ध है एवं मांसाहार पूर्णत: निषिद्ध है। जो मनुष्य मांसाहार करते हैं वह यद्यपि पशुओं की स्वयं हत्या नहीं करते परन्तु हत्या करने वाले मनुष्य मांसाहारियों के लिये ही पशुवध करते हैं जिससे इन दोनों श्रेणी तथा इसमें सहयोगी अन्य लोग सभी लोग भी पाप व अधर्म के भागी होते हैं। महाभारत तक वैदिक काल में भारत में पशु हिंसा नहीं होती थी। यदि किसी ग्रन्थ में कहीं ऐसा कोई संकेत दिखता है, तो वह यथार्थ अर्थ न होकर मिथ्यार्थ या प्रक्षिप्त होता है। मांसाहार न करने से मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति मांसाहारियों से अधिक होती है। शारीरिक उन्नति में मांसाहार न करने से किसी प्रकार की बाधा नहीं आती। हमारे वैदिककालीन सभी राजा, ऋषि-मुनि, विद्वान् शाकाहारी वा दुग्ध, अन्न व फल का आहार ही किया करते थे। हाथी, हिरण, गाय तथा अश्व आदि प्राणी भी शुद्ध शाकाहारी हैं, जिनमें शक्ति, दयाभाव, बल एवं शक्ति है। इनसे मनुष्य एवं संसार की उन्नति होती है तथा मनुष्यों को सुख प्राप्त होता है।

गृहस्थाश्रम का आधार विवाह होता है। विवाह भी वैदिक विधि से होने पर श्रेष्ठ होता है। वैदिक विवाह में विवाह का उद्देश्य तथा पति व पत्नी के कर्त्तव्यों का विधान भी है। पंचमहायज्ञों की चर्चा हम कर चुके हैं। इसके साथ यह भी व्यवस्था है कि जहां तक सम्भव हो पति व पत्नी के गुण, कर्म व स्वभाव समान हों। दोनों एक-दूसरे को जानकर प्रसन्नतापूर्वक विवाह करें। विवाह पूर्ण युवावस्था में होना चाहिये। संसार में संस्कारों से युक्त सुसन्तानों का निर्माण धार्मिक तथा मर्यादित जीवन जीवन जीने वाले सद्गृहस्थी ही कर सकते हैं। यही कारण है कि वैदिक काल में भारत में ऋषि, मुनि, योगी, ध्यानी, चिन्तक, देशभक्त, राम व कृष्ण से महान् पुरुष, ब्रह्मचर्य के आदर्श रूप हनुमान व देवव्रत भीष्म उत्पन्न होते थे, परन्तु महाभारत के बाद वैदिक धर्म के गुणों का आचरण घटने से ऐसे महापुरुष उत्पन्न होना बन्द हो गये। यदि दयानन्द, श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, हंसराज, आनन्दस्वामी, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष, पं० रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह आदि महान् लोग हुए भी तो इसका कारण उनके पूर्वजन्म के संस्कार व इस जन्म की उनकी परिस्थितियां व परिवेश था। सुसंस्कारित सन्तान बनाने के लिये ही ऋषि दयानन्द जी ने संस्कारविधि का प्रणयन किया था। आज के वातावरण में इसका पालन न होने से इससे देश व समाज को जो लाभ हो सकते थे, वह पूरी मात्रा में नहीं हो रहे हैं। देश का सौभाग्य है कि ऋषि दयानन्द प्रदत्त संस्कार विधि हमारे पास है। कभी न कभी लोग इसका महत्त्व समझेंगे और इसका पालन कर इससे अपनी इच्छा के अनुरूप संस्कारित सन्तान भी उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे वैदिक धर्म एवं संस्कृति की न केवल रक्षा ही होगी अपितु दिग्दिगन्त प्रचार-प्रसार भी होगा। विद्वानों तथा युवक-युवतियों का कर्त्तव्य है कि वह सत्यार्थप्रकाश एवं संस्कारविधि आदि ग्रन्थों को पढ़कर इससे लाभ उठायें। इसी में देश व समाज का हित छिपा है।

गृहस्थ जीवन का एक ऐतिहासिक उदाहरण देना भी समीचीन है। योगेश्वर कृष्ण जी ने माता रुक्मणी जी से वैदिक मर्यादाओं का पालन करते हुए विवाह किया था। उनकी एक ही धर्मपत्नी थी। कृष्णविषयक पुराणों की अनेक कथायें काल्पनिक एवं कृष्ण जी के चरित्र को दूषित करने वाली है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में इस पर प्रकाश डाला है। कृष्ण जी एकपत्नीव्रतधारी थे। वह वेदानुयायी थे और वेदों में एकपत्नीव्रतधारी को ही श्रेष्ठ माना गया है। रामचन्द्र जी भी इसका प्रशंसनीय उदाहरण हैं। माता रुक्मणी जी से विवाह होने पर कृष्ण जी व रुक्मणी जी का संवाद हुआ। प्रश्न हुआ कि विवाह किस लिये किया जाता है? इसका उत्तर मिला कि विवाह सुसंस्कारित सन्तान के लिये किया जाता है। कृष्ण जी ने पूछा कि रुक्मणी जी कैसी सन्तान चाहती हैं? इसका उत्तर मिला कि पूर्णत: कृष्ण जी के समान गुण, कर्म, स्वभाव व रूप वाली सन्तान। इस पर कृष्ण जी बोले थे कि यह तभी सम्भव है कि जब हम 12 वर्षों तक वनों व पर्वतों में रहकर ब्रह्मचर्यपूर्वक तपस्वियों व साधकों का-सा जीवन व्यतीत करें। दोनों ने ऐसा ही किया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें प्रद्युम्न नाम के पुत्र की प्राप्ति हुई। महाभारत में लिखा है कि सायं समय में कृष्ण जी व प्रद्युम्न जी अपने कामों को करके वापिस घर लौटते थे। माता रुक्मणी अपने महल पर खड़ी उनकी प्रतीक्षा करती थी। कृष्ण जी और प्रद्युम्न जी में परस्पर ऐसी समानता थी कि रुक्मणी जी कृष्ण व प्रद्युम्न को देखकर अचम्भित हो जाती थी कि उनमें कौन कृष्ण है और कौन प्रद्युम्न? वह दोनों का अन्तर पता नहीं कर पाती थी। यह वेद के विधानों का आचरण कर प्राप्त होने वाली सन्तान का उदाहरण है। गृहस्थ जीवन में सुख उन्हीं को मिलता है जो वेद धर्म का पालन करते हैं। सुख का आधार भी धर्म है। मत व धर्म में कुछ समानतायें होती हैं और कुछ भिन्नतायें होती हैं। धर्म वेद निहित शिक्षाओं सहित अन्य वेदानुकूल शिक्षाओं व सिद्धान्तों के धारण करने को कहते हैं। असत्य, वेदविरुद्ध विचारों व मान्यताओं का त्याग भी मनुष्य का धर्म है। यह भी तथ्य है कि मत-मतान्तरों में अवैदिक वा वेदविरुद्ध मान्यतायें बहुतायत में पाई जाती हैं। अत: सभी गृहस्थियों को वेदपालक सद्गृहस्थी होना चाहिये। उत्तम सन्तान उत्पन्न कर ही पितृऋण चुकता है। वेदाध्ययन, वेदप्रचार तथा वैदिक जीवन व्यतीत कर मनुष्य ऋषि व देवऋणों से भी अनृण हो जाता है। सत्कर्मों व योगाभ्यास से समाधि को प्राप्त होकर मनुष्य के धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष सिद्ध होते हैं। वैदिक जीवन वा गृहस्थाश्रम ही सबके लिये श्रेयस्कर है।

गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ आश्रम है। इसकी महत्ता वेदानुकूल मर्यादित वैदिक जीवन जीने में है। इसी से मनुष्य का जीवन सफल होता है। सभी को वेदाध्ययन व सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर अपने कर्त्तव्यों तथा जीवन शैली को जानना चाहिये तथा उसे अपनाना चाहिये। **इति ओ३म् शम्।**

चतुर्मुखी प्रतिभा सम्पन्न श्रीकृष्ण मनोरंजन की वस्तु नहीं

❑ महावीर 'धीर' शास्त्री, प्रेमनगर, रोहतक-9466565162

ज्ञात इतिहास में महाभारत के प्रथम विश्वयुद्ध के विजेता, योगी, ब्रह्मचारी, राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, मल्लयुद्ध, शस्त्र और शास्त्र दोनों विद्याओं के ज्ञाता, अलौकिक पुरुष श्रीकृष्ण को केवल गोपिकाओं और राधा से जोड़कर एक मनोरंजन की वस्तु बनाया जाना धिक्कार के योग्य है। यह एक महान् व्यक्तित्व तथा इतिहास के प्रति घोर अन्याय है।

जिस व्यक्ति ने बारह वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करके एक पुत्ररत्न 'प्रद्युम्न' को उत्पन्न किया, उस व्यक्ति को गोपिकाओं से जोड़कर उनके साथ नचाया जा रहा है। कृष्ण और गोपिकाओं के घोर अश्लील गीत जोड़-जोड़कर गाए जा रहे हैं। देखिए कितनी भद्दी भावना के गीत जो आकाशवाणी के प्रात:कालीन प्रारम्भिक भक्ति संगीत तक में गाए जा रहे है—

पनियां भरन मैं चली कुंए पर, उस सांवरिया ने छेड़ी।
मैं बोली तो मेरी हांड़ी फोड़ी।
मनियार बनकर आया कन्हैया, मैंने चूड़ी पहनी।
बांह पकड़कर उसने मेरी बार-बार चूड़ी तोडी।

उच्चकोटि के एक अलौकिक महापुरुष के बारे में ऐसी ओछी बातें करना कितना बेहूदा काम है, जिसे बड़े मजे से लिखा और बोला जा रहा है। दूसरे सम्प्रदायों में उनके महापुरुषों के बारे में यदि ऐसी बात कह भी दी जाए तो संप्रदाय के लोग बिल्कुल सहन नहीं करते हैं, अभियोग हो जाते हैं, यहां तक कि सिर भी काट दिए जाते हैं, लेकिन भारतीय अंधविश्वासी मूर्ख व्यक्ति स्वयं ही मनमर्जी से अपने महापुरुषों के बारे में कुछ भी लिख बोल दे तो कोई भी उसका विरोध तो दूर, बल्कि उसे ही श्रद्धा से अपना लेते हैं। कहते हैं कि यह तो हमारी आस्था है। यदि कोई विद्वान् उसे अनुचित बताता है तो उल्टे उसकी आलोचना होती है। अभियोग तक डाल दिए जाते हैं। इसीलिए हमारे समुदाय में मनमर्जी के इतने संप्रदाय और भिन्न-भिन्न तरीके के पूजा-पाठ चले हुए हैं कि जिनकी गणना करना ही कठिन है। सच्ची-झूठी सामयिक बातों पर कहीं भी मंदिर बनाकर अलग-अलग तरीके के पूजा-पाठ शुरू कर दिए जाते हैं और लोगों को मनोकामना पूर्ति के नाम से बहकाना शुरू कर दिया जाता है।

कृष्णजन्माष्टमी जैसे महत्त्वपूर्ण त्यौहार को कृष्ण के चरित्र और शिक्षाओं के अनुसार प्रेरणादायक ढंग से न मनाकर नपुंसकों की तरह मनाया जाता है। कृष्ण अखाड़े में अनेक प्रकार के शारीरिक अभ्यास करता था, लेकिन शायद ही देशभर में किसी मंदिर में अखाड़ा चलता हो। कृष्ण गोपालक था। गायों का शुद्ध दूध पीता था। गायों का चराता था तथा मधुर बांसुरी की आवाज से गायों को मोह लेता था, लेकिन कितने कृष्ण भक्त हैं जो आज गौ पालकर स्वयं दूध दुहकर उसका प्रयोग करते हैं। श्रीकृष्ण जी महाराज शस्त्र और शास्त्र दोनों के ज्ञाता थे। उनका सुदर्शन चक्र तो प्रसिद्ध है जिससे उन्होंने अभिमानी अशिष्ट शिशुपाल का सिर धड़ से अलग कर दिया था। आज कृष्ण भक्ति का स्वांग भरने वाले कितने व्यक्ति हैं जो शस्त्र और शास्त्र दोनों का अभ्यास अपने जीवन में करते हैं? कितने मंदिरों में शस्त्रों और शास्त्रों का अभ्यास कराया जाता है?

यहां तो प्रत्येक मंदिर में नकली कृष्ण का जन्म कराकर उसे पालने में झुलाया जाता है। माता-बहनों में उस कपड़े के कृष्ण पर रुपए चढ़ाने की होड़ लगती है। बालकृष्ण रूप सजाया जाता है। बेटियां बड़ी उमंग से गोपिकाएं बनती हैं और कृष्ण संग नाचती और खेलती हैं। ऊंचे पर रखी हांडी फोड़ने की होड़ मचती है। इन आयोजनों से बच्चों का मनोरंजन तो जाता है, लेकिन बच्चों के मन में श्रीकृष्ण की एक छवि बैठ जाती है, वे उसे माखनचोर और गोपिकाओं के पीछे घूमने वाला मानने लगते हैं। बच्चे क्या देश के बड़े-बड़े अधिकारी और साधु-संत ऐसे विचारों के पाए जाते हैं, जो कहते हैं कि श्रीकृष्ण की हजारों रानियां थीं तो हमें अनेक संबन्ध क्यों न बनाने चाहिएं? एक पुरुष अधिकारी ने पिछले तो वर्षों में घोषणा कर दी थी कि मैं श्रीकृष्ण की

शेष पृष्ठ 16 पर....

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर-डॉ. चौधरी

आईसीएआर की डीडीजी, एडीजी सहित नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के 55 सदस्यीय दल ने गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा किया, प्राकृतिक खेती पर आचार्य श्री देवव्रत जी के प्रयोगों को सराहा।

कुरुक्षेत्र, 3 सितम्बर 2024। आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा, ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डॉ. राजबीर, डॉ. वेलमुरुगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्यश्री देवव्रत जी के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ० हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया।

डॉ० चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं, क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रहेगा। आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर 'कमलम्' का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़कर यदि किसान काम करेगा तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ० हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका बहुत अहम् है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते, जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता, क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपितु नमी और वापसा की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रोबायोलोजिस्ट डॉ० बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आमतौर पर खेत की छह इंच, एक फीट या दो फीट मिट्टी के तत्त्वों की बात होती है, जबकि सच्चाई यह है कि मिट्टी में फसलों के लिए आवश्यक सभी तत्त्वों का अथाह भण्डार है उस उन तत्त्वों को ऊपरी सतह पर लाने के लिए सही वातावरण उपलब्ध कराने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती, जीवाणुओं की खेती है। इसमें देशी गाय के गोबर-गोमूत्र से बने जीवामृत व घनजीवामृत के प्रभाव से जमीन के नीचे के मित्रजीव ऊपर आते हैं और जमीन को उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और धीरे-धीरे देश के कृषि वैज्ञानिक इसे स्वीकार भी कर रहे हैं।

चतुर्मुखी प्रतिभा सम्पन्न श्रीकृष्ण... पृष्ठ 14 का शेष....

राधा हूं। उसने राधा के कल्पित वस्त्र पहनने शुरू कर दिए थे तथा तदनुरूप हाव-भाव प्रदर्शित करता था।

यदि हम श्रीकृष्णजन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण के चरित्र व शिक्षाओं के अनुरूप उनको स्मरण कर उनसे प्रेरणा लें, तो देश में आतंकवाद और अपराध पनप ही नहीं सकते। यदि हमारे प्रत्येक मंदिर व शिक्षा संस्थानों में रुचि अनुसार शस्त्र और शास्त्रों का नियमित अभ्यास होता रहे तथा जन्माष्टमी पर शस्त्र और शास्त्रों की प्रतियोगिताओं का आयोजन व पुरस्कार वितरण हो तो युवाओं के मन और तन दोनों ही स्वस्थ होकर देश का वातावरण ही सुखमय हो जाए।

यदि हम हांडी फोड़ने की जगह जन्माष्टमी को शस्त्रास्त्रों का संचालन करते हुए आतंकवादियों को ललकारते हुए गीता के इस श्लोक का पाठ करते हुए—

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय:॥

कश्मीर की ओर दस किलोमीटर तक प्रस्थान कर दें तो जन्माष्टमी मनाना सार्थक हो सकता है।

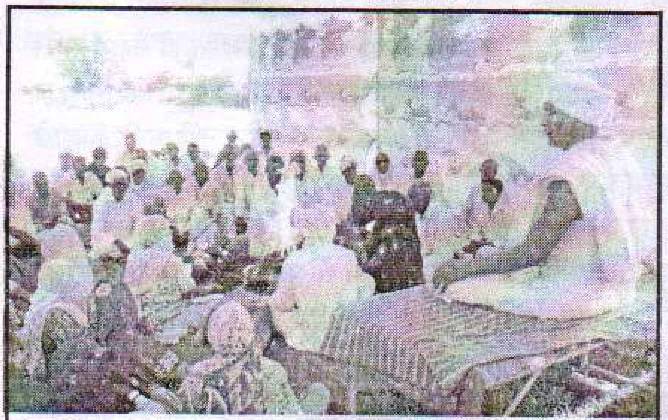

दिनांक 21 अगस्त 2024 को नान्दल लाखन माजरा जिला रोहतक में ब्रह्मयज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें पूज्य आचार्य वेदमित्र जी ने यज्ञ करवाकर यज्ञ के विषय में उपदेश दिया। इस अवसर पर अनेक यजमान भी उपस्थित हुए।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार पत्र में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

दास्तान-ए-गद्दारी (5)... पृष्ठ 10 का शेष....

का भी भारी संहार हुआ, तथापि विजयी अब्दाली ने दिल्ली में प्रवेश कर राजपूत राजाओं से कर तलब किया। जयपुर के राजा माधोसिंह ने पेशवा बालाजी (जो भाऊ की सहायता करने पानीपत की तरफ आ रहा था और वह अभी मालवा में था कि उसे महाविनाश का समाचार मिला) से बूंदी आने की मिन्नत की और लिखा कि सब राजपूत राजा सेना सहित वहाँ आ मिलेंगे।

परेशान व दु:खी पेशवा ने लिखा कि यह तो पहले होना चाहिए था, जब भाऊ ने सब अपराधों को माफ कर पिछली बातों को भूलने को कहा था.... राजपूतों को कुछ होश आना चाहिए। हम आर गए तो नर्मदा पार चले जायेंगे। मुझे अब अब्दाली का डर नहीं है।

आर्यसमाज तिगरा-भौड़ी का उत्सव सम्पन्न

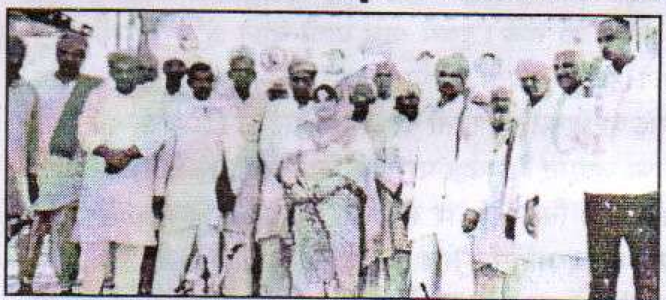

आर्यसमाज के उत्सव पर अंजलि आर्या को सम्मानित करते हुए।

आर्यसमाज तिगरा-भौड़ी की ओर से दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में वैदिक यज्ञ और विश्व कल्याण के लिए आहुतियां दी गईं और दोपहर के सत्र में आर्यसमाज के विद्वानों ने सत्संग और प्रवचन किया। आर्य विदुषी बहन अंजलि आर्या ने प्रवचन करते हुए कहा कि आकृति और प्रकृति दोनों से ही मानवता सिद्ध होती है। उन्होंने आर्यों को जागृत करते हुए कहा कि आज भी लोग ऊँच-नीच और छुआछूत में फंसे हैं। हमें अपने बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार देने चाहिएं जिससे बड़े होकर ऊँच-नीच का भेदभाव न करें। जिस प्रकार कृष्ण और सुदामा में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। आर्यसमाज तिगरा के प्रधान मनोज आर्य ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य है संसार का कल्याण करना। आर्ष विद्या जो ऋषियों की विद्या है उसको प्रचारित करना। इस अवसर पर राकेश कुमार, हरीराम आर्य, रामनारायण, रिटायर्ड इंस्पेक्टर जगदीश सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और गांव-गांव में यज्ञ व वेद प्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञदान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा